INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

Level – 2

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

हिंदी (भाषा - I & II)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** " को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है । ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 भर्ती परीक्षा "** में पूर्ण संभव मदद करेंगें ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं । अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं ।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/98bnwi

Online Order करें – https://shorturl.at/ixJQI

https://shorturl.at/belyI

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	हिंदी (भाषा – I)	
I.	अपठित गद्यांश • पर्यायवाची, विलोम, वाक्याशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि । उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अव्यय ।	I
2.	अपठित गद्यांश • रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल, लिंग ज्ञात करना। दिए गए शब्दों का वचन काल और लिंग बदलना ।	74
3.	वाक्य रचना एवं वाक्य के प्रकार तथा पदबंध	89
4.	भाषा की शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषा दक्षता का विकास ।	105
5.	भाषा शिक्षण के प्रमुख कौशल	117
6.	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन	125
	हिंदी (भाषा – II)	
7.	अपठित गद्यांश • युग्म शब्द, वाक्याशों के लिए एक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, काल, शब्द शुद्धि ।	130
8.	अपठित पद्यांश • भाव सौंदर्य • नाद सौंदर्य	146

	• विचार सौंदर्य जीवन दृष्टि • शिल्प सौंदर्य	
९.	वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के भेद, पदबंध, मुहावरे, लोकोक्तियाँ। कारक चिह्न, अव्यय, विराम चिह्न	
10.	भाषा शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषायी दक्षता का विकास ।	
11.	भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) शिक्षण अधिगम सामग्री - पाठ्य पुस्तक, बहु - माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन ।	
12.	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन । उपचारात्मक शिक्षण ।	

अध्याय – I

अपठित गद्यांश

गद्यांश – I

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :-

हम लोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है। हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है। जो साहित्य अपने आपके लिए लिखा जाता है उसकी क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्र्य, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय - निधि है।

- 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है -
  (1) दूसरों से आशा रखना
  (2) पयारा मुख अच्छा लगना
  (3) पराये मुख की अपेक्षा करना
  (4) ईश्वर का मुख
  उत्तर : - (1)
- कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ?
  (1) सेवा (2) भाषा
  (3) प्रयोग (4) हिंदी
  उत्तर :(3)
- इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है
  (1) आशय (2) मतलब
  (3) धन (4) अभिप्राय
  उत्तर : - (3)
- कौनसा शब्द एकवचन है ?
  (1) विचारों (2) भाषाओं
  (3)अक्षय (4) मनुष्यों
  उत्तरः - (3)
- कीमत' का बहुवचन है ।
  (1) कीमती (2) कीमतों
  (3) किमतों (4) किम्मत
  उत्तर : - (2)
- 'माध्यम' का बहुवचन है ।
  (1) मध्यमा (2) माध्यमिक
  (3) मध्यम (4) माध्यमों
  उत्तर : - (4)
- 'अक्षय – निधि' का अर्थ है ।
  (1) बिना क्षय रोग
  (2) किसी का नाम
  (3) कभी खत्म न होने वाली सम्पत्ति
  (4) रोग रहित नहीं
  उत्तरः - (3)

गद्यांश – 2

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिएः

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुंचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें संदेह नहीं । लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अंधकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जो कि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बनैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद - प्रभृति विभिषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक लीला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटो की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता हमें सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगीनियाँ समूचे देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं । अतः कल्पना के भव्य महलो के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा ।

- वह शब्द बताइए जिसमें संधि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है
  (A) रंगोनियों (B) ध्वंसावशेषों
  (C) अधीरता (D) संप्रदायवाद
  उत्तरः - (B)
- इनमें से वह शब्द बताइए जिसमें समास तथा उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ।
  (A) घात-प्रतिघात (B) भारतवासियों
  (C) कर्मयोगी (D) आत्मनिर्भरता
  उत्तरः - (A)
- वह तत्सम शब्द बताइए जिसके साथ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग है।
  A मानवीय B. मानवता
  C. अधीर D. विखंडित
  उत्तरः- D
- कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण इनमें कौनसा है ?
  A. लोमहर्षक B. आत्मनिर्भरता
  C. देशवाशियों D. सर्वाधिक
  उत्तर : -A

- इनमें से कौन सा शब्द तत्सम है ?

(A) स्वतंत्रता (B) श्रद्धा
(C) झोपड़ियों (D) आजादी

उत्तर –B

गद्यांश – 3

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए:
आज हमारे सामने अहं सवाल यह है कि धर्म बड़ा या राष्ट्र? उत्तर में यह निर्विवाद तय होना चाहिए कि राष्ट्र बड़ा है। लेकिन साथ ही आस-पास यह भी देखना है कि राष्ट्र की मौलिक अवधारणाएँ क्या हैं ? क्या मिट्टी, पानी, नदी, पहाड़, राजा, प्रजा से ही राष्ट्र की मूर्ति बनती है ? नहीं। राष्ट्र की संपूर्ण छवि और पूरा व्यक्तित्व हजारों वर्षों की मानवीय चेतना, जीवन के शाश्वत मूल्यों और अपने धरती-आकाश में अखण्ड विश्वास से बनता है। आदमी की वैज्ञानिक और मौलिक बुलन्दियों के साथ उसके सफर में और कुछ भी मुलायम सरीखा साथ रहा है। उसको कतरा - कतरा लेकर भी एक बनने की होशियारी सिखाता रहा है। लगता-लम्हा के बीच समय के अरसों को बटोरता रहा है।

- वह शब्द बताइए जिसमें दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ

(A) निर्माण (B)निर्विरोध
(C) निरीक्षक (D)निरकुंश

उत्तरः-(A)

- इनमें से जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा का सही उदाहरण है।

(A) दानव – दानवता (B) सर्व - सर्वस्व
(C) चतुर – चतुराई (D) गीना – गान

उत्तरः - (A)

- 'मौलिक' शब्द किस वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है?

(A) मूल से मिलाकर बनाया हुआ
(B) मूल, जो किसी की नक़ल न हो
(C) मूल में विश्वास करना
(D) मूल की स्थापना

उत्तरः - (A)

- इनमें से आकाश का सही पर्याय है ।

(A) सर (B) वासव
(C) व्योम (D) उत्पल

उत्तरः- (C)

- 'आस – पास' शब्द में कौन – सा समास है ?

(A) द्वंद्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

उत्तरः- (A)

गद्यांश – 4

निम्न गद्यांश का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों का सही विकल्प चुनिए-
यदि कविता का प्रधान धर्म मनोरंजन और प्रभावोत्पादकता न हो तो-उसका होना निष्फल ही समझना चाहिये। पद्य के काफिये वगैरह की जरूरत है, कविता के लिए नहीं। कविता के लिए तो ये बातें एक प्रकार से उल्टी हानिकारक हैं। तुले हुए शब्दों में कविता करने और तुक, अनुप्रास आदि ढूँढ़ने से कवियों के विचार-स्वातन्त्र्य में बड़ी बाधा आती है। पद्य के नियम कविता के लिए एक प्रकार की बेड़ियाँ हैं। उनसे जकड़ जाने से कवियों को अपनी स्वाभाविक उड़ान में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे। पर काफिये और वजन उसकी स्वाधीनता में विघ्न डालते हैं। वे उसे अपने भावों को स्वतन्त्रता से प्रकट नहीं करने देते। काफिये और वजन को पहले ढूँढ़कर कवि को अपने मनोभाव तदनुकूल गढ़ने पड़ते हैं ।इसका मतलब यह हुआ कि प्रधानता को अप्रधानता ग्राष्ठ हो जाती है, और एक बहुत ही गौण बात प्रधानता के आसन पर जा बैठती है। फल यह होता है कि कवि की कविता का असर जाता रहता है।

- निष्फल शब्द में संधि है

(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि
(3) व्यंजन संधि (4) विसर्ग संधि

उत्तर : - (4)

व्याख्या - निष्फल शब्द 'निः+फल' से मिलकर बना है। अतः यहाँ विसर्ग संधि है।

- 'कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे।' रेखांकित पद में कौनसा समास है ?

(1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष
(3) कर्मधारय (4) द्विगु

उत्तरः - (1)

व्याख्या - स्वाधीनतापूर्वक शब्द में अव्ययीभाव समास है।

- "काफ़िये और वजन को पहले ढूँढ़कर कवि को अपने मनोभाव तदुकूल गढ़ने पड़ते हैं। " रेखांकित पद है -

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(2) जातिवाचक संज्ञा
(3) भाववाचक संज्ञा
(4) पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तर : - (2)

व्याख्या - कवि शब्द जातिवाचक संज्ञा है।

- 'विघ्न' शब्द का अर्थ है -

(1) बाधा (2) चुनौती
(3) परिश्रम (4) प्रयास

उत्तरः - (1)

- **तद्भव एवं तत्सम , देशज , विदेशज**

तत्सम एवं तद्भव

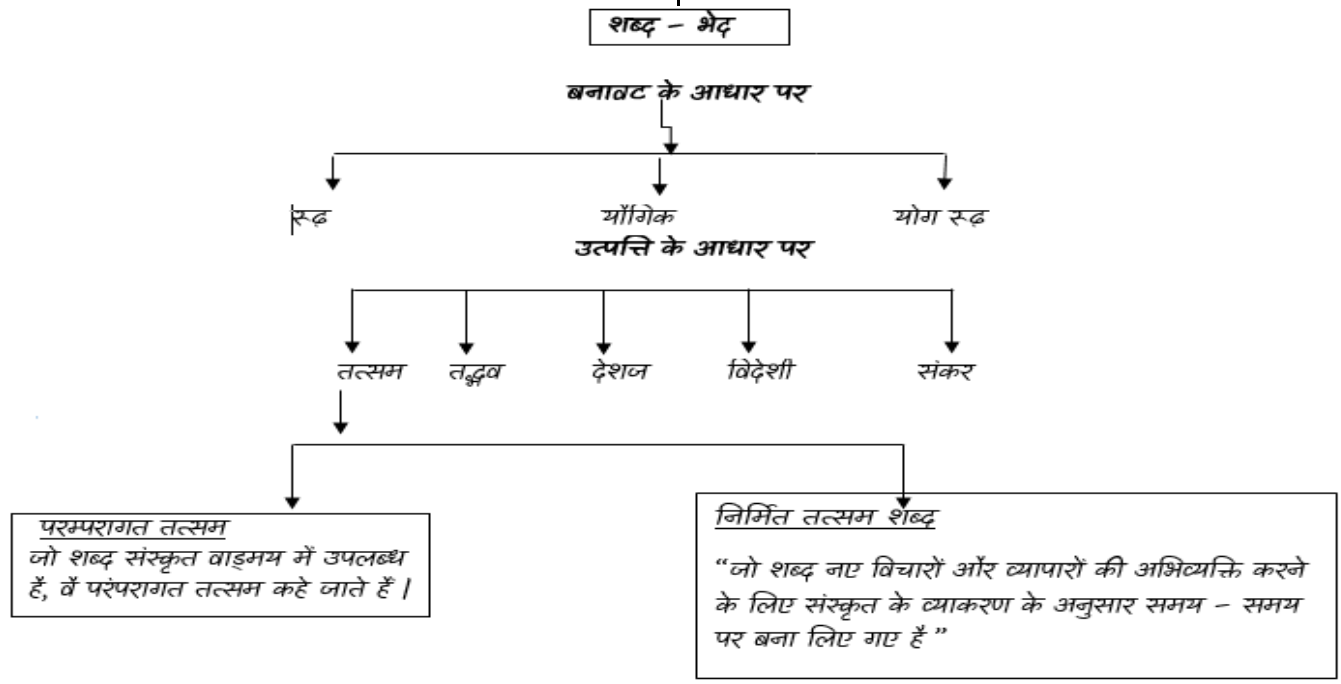

1. *तत्सम : ' तत्सम ' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है – 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों- का-त्यों प्रयोग में लाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं ; जैसे – अग्नि,वायु, माता, पिता, प्रकाश , पत्र सूर्य आदि।*
2. *तद्भव शब्द – ' तद्भव ' शब्द का अर्थ है- ' उससे होना ' ; अर्थात् वें शब्द जो ' स्त्रोत भाषा ' के शब्दों से विकसित हुए हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि – प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी तक पहुंचे हैं , अत : इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है , जैसे – 'दही' शब्द 'कान्ह' शब्द (कृष्ण) से विकसित होकर हिन्दी में आए हैं ऐसे शब्दों को **'तद्भव शब्द'** कहा जाता है*

तद्भव	**तत्सम**
सोना	स्वर्ण
सोलह	षोड़स
कूची	कूर्चिका
मयूर	मोर
पिय	प्रिय
किवाड़	कपाट
कान	कर्ण
खेत	क्षेत्र
घर	गृह
गाय	गौं
बात	वार्ता
चंदा	चन्द्रमा
अमिय	अमृत
माता	मातृ
काठ	काष्ठ
लोहा	लौंह
बन्दर	वानर
दूध	दुग्ध

3. ***देशज/देसी :*** *'देशज' (देश+ज) शब्द का अर्थ है- देश में जमा। अतः ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं ; जैसे – थैला , गड़बड़ , टट्टी , पेट , पगड़ी , लोटा ,टाँग , ठेठ आदि।*
4. ***विदेशज/विदेशी/आगत :*** *' विदेशज ' (विदेश+ज) शब्द का अर्थ है –' विदेश में जन्मा '। 'आगत' शब्द का अर्थ है आया हुआ हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो हैं तो विदेशी मूल के, पर परस्पर संपर्क के कारण यहाँ प्रचलित हो गए हैं। अतः अन्य देश की भाषा से आए हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यो-का-त्यों अपना*

लिया गया है (ऑर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट इत्यादि) और कुछ को हिन्दीकरण (तद्भवीकरण) कर के अपनाया गया है।

(ऑफिसर > अफसर, लैंनटर्न > लालटेन, हॉस्पिटल > अस्पताल, कैप्टेन > कप्तान, गोडाउन > गोदाम, जैन्युअरि> जनवरी) इत्यादि ।

अरबी शब्द

अक्ल, अज़ब, अजाएब, अजीब, असर, अहमक, अल्ला, अदा, आदत, आदमी, आखिर, आसार, इलाज, इनाम, इस्तीफा, इज्जत, इजलास, इमारत, .ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औलाद, औसत, कर्ज, कमाल, कब्र, कदम, कसूरं, कसर, कसम, कसरत, किला, किस्त, किंस्मत, किस्सा, किताब, कुर्सी, खत, खत्म, खबर, खराब, ख्याल, गरीब, गैर, जलसा, जिस्म, जाहिल, जहाज, जवाब, जनाब, जालिम, जिहन, तकदीर, तकिया, तरफ, तमाम, तकाजा, तुर्की, तजुरबा, तमाशा, तारीख, दगा, दफा, दफ्तर, दवा, दल्लाल, दावा, दान, दावत, दाखिल, दिक,दीन, दुआ, दुकान, नकद, नकल, नहर, नशा, नतीजा, चाल, फकीर, फायदा, फैसला, बाकी, मवाद, मदद, मल्लाह, मजबूर, मरंजी, मशहूर, मजमून, मतलब, मालूम, मामूली, मात, मानी, मिसाल, मुदई, मुसाफिर, मुंसिफ, मुकदमा, मौका, मौलवी, मौसम, यतीम, राय, , लफ्ज, लहजा, लायक, लिफाफा, लियाकत, लिहाज, वकील, वहम, वारिस, शराब, हक, हद, हरामी, हमला, हवालात, हाजिर, हाशिया, हल, हाकिम, हिसाब, हिम्मत, हैजा, हौसला इत्यादि।

फारसी शब्द

अदा, अफसोस, आतिशबाजी, आबरू, आबदार, आमदनी, आराम, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कद (कद्द भी), किशमिश, कुश्ती, कमीना, कबूतर कूचा, खुद, खामोश, खुश, खुराक, खूब, खरगोश, गज, गर्द,, गुम, गल्ला, गोला, गुलबन्द, गरम, गिरह, गवाह, गुल, गुलाब, गोश्त, चरखा, चश्मा, चादर चाबुक, चिराग, चेहरा, चूँकि, चाशनी, जहर, जंग, जबर, जादू, जिन्दगी, जागीर, जान, जीन, जुरमाना, जोर, जिगर, जोश, तबाह, तनख्वाह, तरकश, तमाशा, ताक, ताजा, तीर, तेज, दरबार, दंगल, दस्तूर, दीवार, दुकान, दिलेर, देहात, दवा, दिल नापसंद, नाव, नामर्द, पलक, पलंग, पारा, पुल, पेशा, पैमाना, बहरा बीमार, बेहूदा, बेवा, बेरहम, मजा, मलीदा, मरहम, मलाई, मादा, माशा, मुफ्त, मीना, मुर्गा, मोर्चा, याद, यार, रंग, राह, रोगन, लगाम, वापिस शादी, शोर, सरकार, सरदार, सरासर, सितार, इत्यादि।

पुर्तगाली शब्द

Alcatro	अलकतरा
Altionet	आल्पिन
Almario	अलमारी
Bolde	बाल्टी
Fita	फीता
Tobacco	तम्बाकू

संकर (मिश्रित) शब्द

हिन्दी में ऐसे भी शब्द हैं, जो दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बन गये हैं; नीचे देखें

(क) संस्कृत और हिन्दी के शब्दों के मेल से निर्मित-उप-' बोली, भोजन-गाड़ी, रात्रि-ड़उड़ान आदि। -

(ख) संस्कृत और फ़ारसी के शब्दों के मेल से निर्मित- विज्ञापनबाज़ी, छायादार, लोकशाही आदि।

(ग) फारसी और हिन्दी- भाषा के शब्दों के मेल से निर्मित- कमर-पट्टी, ख़रीदना, जेब-कतरा, बेडौल आदि।

(घ) अरबी और हिन्दी-अख़बारवालां, अजाएबघर हवा-चक्की, मालगाड़ी, किताबंघर, कलम-चोर "

(ड़) तुर्की और हिन्दी-तोप-गाड़ी, तोप-तलंवार आदि।

(च) अरबी और फारसी-अक़लमन्दं गोताख़ोर, तहसीलदार फ़िज़ूल-ख़र्च आदि।

(छ) हिन्दी और फारसी-कटोरदान, चमकंदार, मसालेदार किरायेदार, छापाख़ानां, थानेदार, पंचायतनामा आदि।

(ज) अँगरेज़ी और हिन्दी-टिकट-घेर/ ड़बल रोटी, रेलगाड़ी अलार्म-घड़ी, सिनेमा-घर, रेलवे-भाड़ा, पुलिस-चोकी, डाक-घर आदि।

(झ) हिन्दी और अँगरेज़ी-कपड़ा-मिल, जाँच-कमीशन, लाठी-चार्ज आदि।

(ञ) अँगरेज़ी और फारसी- जेलख़ाना, सील-बन्द आदि।

अंग्रेजी शब्द

अफसर	officer(ऑफीसर)
इंजन	Engine(एंजिन)
अस्पताल	Hospital(हास्पिटल)
डाक्टर	Doctor(डॉक्टर)
कप्तान	captain(कैप्टन)
थेटर, ठेटर	Theatre(थियेटर)
मील	Mile(माइल)
बोतल	Bottle(बाटल)
टेसन	Station(स्टेशन)
इस्कूल	School(स्कूल)
बुकसट	Bushshirt(बुश्शर्ट)
टीन	tin(टिन)
पुलिस	police(पोलिस)
इनिस्पेक्टर	Inspector(इंसपेक्टर)
कलेक्टर	Collector(कलेक्टर)

तुर्की शब्द

उर्दू, कज्जाक, काबू, कालीन, कुली, कुर्की, कैंची, चकमक, चमचा, चिक, जुगुल, चेचक, ज़ालिम, तमगा, तलाश, लोप, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा।

प्रिया	-	प्रेमिका, सजनी, प्रियतमा, प्रेयसी, दिलरुबा ।
प्रिय	-	प्रेमी, प्रियतम, साजन, प्यारा, स्नेही
प्रासाद	-	राजमहल, महल, सदन, भवन, हवेली
प्रेम	-	स्नेह, प्रीति, प्यार, अनुराग,ममता/
पत्थर	-	प्रस्तर, पाषाण, पाहन, उपल, अश्म, शिला, ग्रावा ।
पत्ता	-	दल, द्रुमछल, किसलय, पल्लव ।
पत्नी	-	दारा, भार्या, वधू, बहू, गृहिणी, कांता, अर्द्धांगिनी ।
पराग	-	कुसुमराज, केशर, पुष्पधूलि, पुष्परज।
परिपाटी	-	ढंग, तरीका, पद्धति, प्रणाली, रीति
परोक्ष	-	अगोचर, अप्रत्यक्ष, ओझल, तिरोहित।
पलाश	-	किंजुल, किंशुक, केसू, टेसू ।
पहाड़	-	अचल, अद्रि, गिरि, दुर्गा, भवानी, शिवानी, शैलजा, शैलसुता ।
प्रकाश	-	आलोक, उजाला,छवि, ज्योति, दीप्ति, द्युति ।
प्रणय	-	अनुरक्ति, अनुराग, आसक्ति, प्यार, प्रीति, प्रेम, रति, स्नेह ।
प्रशंसा	-	श्लाघा, स्तुति, सराहना, गुणवान, तारीफ, बड़ाई ।
प्रसन्न	-	आनंदित, आह्लादित, खुश, प्रफुल्ल, हर्षित ।
प्रस्तावना	-	आमुख, उपोद्घात, प्राक्कथन, भूमिका ।
फूल	-	पुष्प, प्रसून, सुमन, कुसुम, गल ।
ब्रह्मा	-	स्वयंभू, स्रष्टा, प्रजापति, अज, विधाता, विधि, चतुरानन ।
ब्राह्मण	-	द्विज, विप्र, भूदेव, ज्येष्ठ वर्ण ।
बन्दर	-	कपि, कीश, मर्कट, वानर, शाखामृग, हरि ।
बलराम	-	बलभद्र, मसूली, खेतीरमण, हलधर, ह्लायुद्ध, हली ।
बाघ	-	व्याघ्र, केसरी,शार्दूल ।
बाधा	-	अटकाव, अड़चन, रुकावट, विघ्न, व्यवधान ।
बुद्धि	-	धी, प्रज्ञा, मति, मनीषा ।
बेचैन	-	विकल, व्याकुल, अशांत, बेताब, चिंतातुर ।
बैल	-	अक्षधर, उक्षा, ऋषभ, पुंगल, वृष, वृषभ ।

ब्रह्म	-	आत्मभू, चतुरानन, नाभिज, प्रजापति, विधाता, विधि, विरंचि, स्रष्टा, हिरण्यगर्भ ।
भय	-	त्रास, भीति, विभीषा ।
भिक्षा	-	भीख, मधुकरी, याचक, वृति ।
भैंस	-	कासरी, महिषी, लुलाप, सैरिभी ।
भौंरा	-	अलि, द्विरेफ, भँवरा, भृंग, भ्रमर, मधुकर, मधुप, षट्पद ।
भास्कर	-	रवि, सूर्य, दिवाकर, दिनकर, दिनेश, भानु ।
मछली	-	मत्स्य, मीन, सफरी, झख ।
मधुकर	-	भौंरा, भ्रमर, भृग, षट्पद, मधुप, अलि
महादेव	-	शंभु, शिव, शंकर, पशुपति, चन्द्रशेखर, त्रिलोचन, नीलकंठ, गिरीश ।
महेन्द्र	-	इन्द्र, सुरेश, देवराज, देवेन्द्र ।
मोक्ष	-	मुक्ति, निर्वाण, परमपद, कैवल्य
मक्खन	-	दधिसार, नवनीत, माखन, लौनी
मट्ठा	-	गोरस, छाछ, तक्र ।
मदिरा	-	कादंबरी, दारु, मद, मद्य, वारुणी, शराब, सुरा, हाला ।
मधु	-	शहद, भ्रमराज, मकरंद, माक्षिक, सुधा ।
माता	-	अंबा, जननी, प्रसू, माँ ।
मार्ग	-	पंथ, पथ, बाट, रास्ता, राह ।
मित्र	-	दोस्त, मीत, संगी, सखा, सपक्ष, सहचर, साथी ।
मुक्ति	-	कैवल्य, अपवर्ग, निर्वाण, परमधाम, परमपद, मोक्ष, सद्गति ।
मुग्ध	-	कैवल्य, अपवर्ग, निर्वाण, परमधाम, परमपद, मोक्ष, सद्गति
मुनि	-	तपस्वी, तापस, योगी, व्रती, साधु
मुर्गा	-	अरुणशिखा, कुक्कुट, तमचूर, ताम्रचूड, ताम्रशिख ।
मूँगा	-	प्रवाल, रक्तमणि, रक्तांग, विद्रुम ।
मृदु	-	कोमल, नाजुक, सौम्य, मृदुल, मसृण ।
मृषा	-	अनृत, असत्य, झूठ, मिथ्या ।
मेंढक	-	मंडूक, दर्दुर, दादुर,भेक, वर्षाभू, शातूर।
मोती	-	मुक्ता, मौक्तिक, शशिप्रभा, सीपज
मैला	-	अशुचि, मलिन, म्लान, अपवित्र, गंदा ।
मोर	-	मयूर, केहा, शिखी, सर्पभक्षी, शिवसुतवाहन ।

(य-ह)

- **समास**

❖ समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात् समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।
सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।
जैसे:- गंगाजल -
गंगा जल गंगा जल गंगा का जल
(पूर्वपद) (उत्तरपद) (समस्त पद) (समास विग्रह)
कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं
समास के प्रकार Types Of Compound

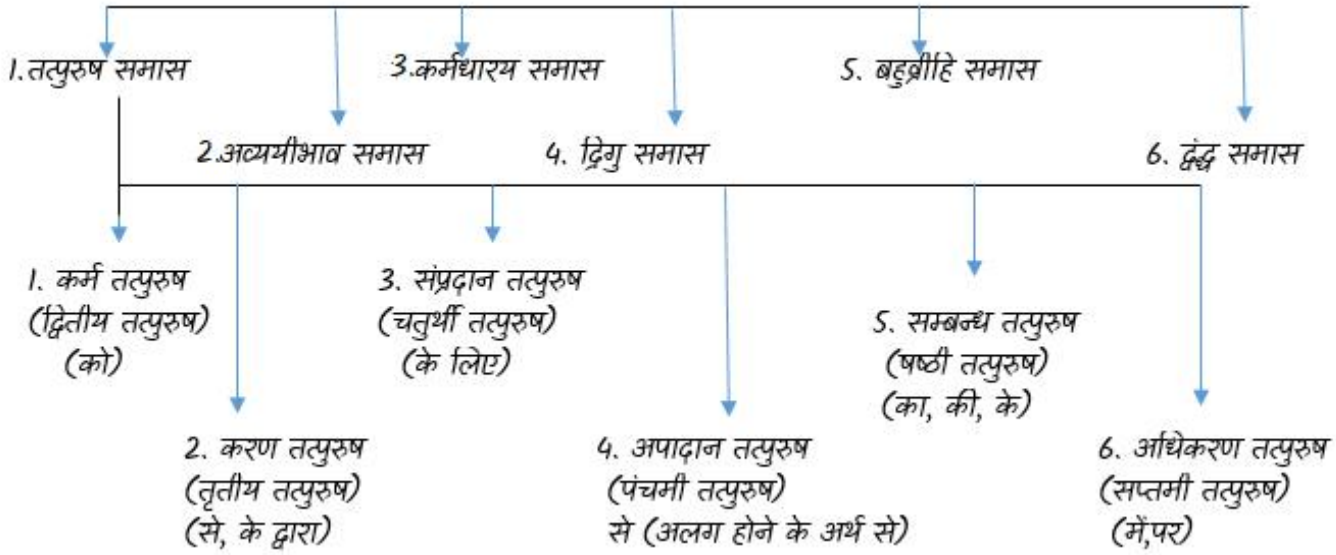

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण
(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव
(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु
(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व
(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:
भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।
अर्थात् ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं। जैसे –यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति, जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound
जिस समास में पहला पद अर्थात् पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।
पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो/जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप मे/जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार

प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में/ (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो। प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला/वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग

अहेतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा – ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
निः सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) तत्पुरुष समास Determinative compound

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौण होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक-चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[1]कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद		विग्रह
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त

पहचानः- कर्मधारय समास के विग्रह में 'के समान', 'रूपी' अथवा 'जैसा' शब्द आते हैं।

समस्त पद		विग्रह
विद्याधन	-	विद्यारूपी धन (विद्या के समान धन)
राजीवनयन (राजीव+ नयन)	-	राजीव अर्थात् कमल जैसे नयन
कमलाक्षी (कमल + अक्षी)	-	कमल जैसी आंखों वाली
कंबू ग्रीवा (कंबू + ग्रीवा)	-	कबूतर जैसी गर्दन वाली
कर कमल (कर + कमल)	-	कमल के समान कर (हाथ)
मुख चंद्र(मुख + चंद्र)	-	चंद्र सा मुख (चंद्र के समान मुख)
देहलता (देह + लता)	-	लता जैसी देह (शरीर)
वचनामृत (वचन + अमृत)	-	अमृत तुल्य वचन (अमृत के समान वचन)
कन्यारत्न (कन्या + रत्न)	-	रत्न जैसी कन्या
मृगनयनी (मृग + नयनी)	-	मृग जैसे नयन
चंद्रमुखी (चन्द्र + मुखी)	-	चंद्र के समान मुख
शूरवीर (शूर + वीर)	-	शूर के समान वीर
कुसुमकपोल(कुसुम + कपोल)	-	कुसुम (फूल) के समान कपोल (गाल)
स्त्रीरत्न (स्त्री + रत्न)	-	स्त्री रूपी रत्न
क्रोधाग्नि (क्रोध + अग्नि)	-	क्रोध रूपी अग्नि
नृसिंह (नृ + सिंह)	-	सिंह रूपी नर
ग्रंथरत्न (ग्रंथ + रत्न)	-	ग्रंथ रूपी रत्न
कमल नयन (कमल + नयन)	-	कमल के समान नयन
चरण कमल (चरण + कमल)	-	कमल के समान चरण
नयनबाण (नयन + बाण)	-	नयन रूपी बाण
प्राण प्रिय (प्राण + प्रिय)	-	प्राणों के समान प्रिय

मध्यलोपी कर्मधारय समासः-

पूर्वपद तथा उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाले पद का लोप हो जाता है।

समस्त पद - विग्रह

पनचक्की - पानी से चलने वाली चक्की
रेलगाड़ी - रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
दहीबड़ा - दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष - वन मे निवास करने वाला मानुष
गुरुभाई - गुरु के सम्बन्ध मे भाई
मधुमक्खी - मधु का संचय करने वाली मक्खी
मालगाड़ी - माल ले जाने वाली गाडी
बैलगाड़ी - बैलों से खींची जाने वाली गाडी
पर्ण शाला - पर्णों से बनी शाला
मृत्युदंड - मृत्यु के लिए दिए जाने वाला दंड
पर्णकुटी - पर्णों से बनी कुटी
धृतअन्न - धृत से युक्त अन्न

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरणः-

समस्त पद		विग्रह
रक्तलोचन	-	रक्त (लाल) है जो लोचन (आँख)
महासागर	-	महान है जो सागर
चरमसीमा	-	चरम तक पहुँची है जो सीमा
कुमारगंधर्व	-	कुमार है जो गन्धर्व
प्रभुदयाल	-	दयालु है जो प्रभु
परमाण	-	परम है जो अण
हताश	-	हत है जिसकी आशा
गतांक	-	गत है जो अंक
सद्धर्म	-	सत् है जो धर्म
महर्षि	-	महान है जो ऋषि
चूड़ामणि	-	चूड़ा (सर) में पहनी जाती है जो मणि
प्राणप्रिय	-	प्रिय है जो प्राण की
नवयुवक	-	नव है जो युवक
सदाशय	-	सत् है जिसका आशय
परकटा	-	कटे हुए हैं पर जिसके
कमतोल	-	कम तोलता है जो वह
बहुसंख्यक	-	बहुत है संख्या जिनकी
सत् बुद्दि	-	सत् है जो बुद्धि
अल्पाहार	-	अल्प है जो आहार
मंदबुद्धि	-	मंद है जिसकी बुद्धि
कुमति	-	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	-	कुत्सित है जो पुत्र
दुष्कर्म	-	दूषित है जो कर्म
कृष्ण- पक्ष	-	कृष्ण (काला) है जो पक्ष
राजर्षि	-	जो राजा भी है और ऋषि भी
नरसिंह	-	जो नर भी है और सिंह भी
चरणारविन्द	-	चरणरूपी अरविन्द (कमल)/ऐसा चरण जो कमल के समान हो
पदारविन्द	-	ऐसा पद जो अरविन्द के (कमल के) समान हो
कनकलता	-	कनक की सी लता
आशालता	-	आशारूपी लता
कापुरुष	-	कायर पुरुष

15. कोष्ठक : (), { }, [ ]

(i) वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु मुँह की उपमा मयंक (चन्द्रमा) से दी जाती है।
(ii) नाटक में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए।
कोमा – (खिन्न होकर) मैं क्या न करूँ ? (ठहर कर) किन्तु नहीं, मुझे विवाद करने का अधिकार नहीं।

16. लोप चिह्न .....

लिखते समय लेखक कुछ अंश छोड़ देता है तो उस छोड़े हुए अंश के स्थान पर x x xया लगा देता है।
"तुम्हारा सब काम करूँगा।..... बोलो, बड़ी माँ.....
तुम गाँव छोड़कर चली तो नहीं जाओगी ? बोलो..... ।।

17. इतिश्री/समाप्ति चिह्न &0& & &

किसी अध्याय या ग्रंथ की समाप्ति पर इस चिह्न काप्रयोग किया जाता है।

18. विकल्प चिह्न /

जब दो में से किसी एक को चुनने का विकल्प हो।
जैसे- शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है कवयित्री/कवियत्री या दोनों शब्द समानार्थी है जैसे जो सदा रहने वाला है। शाश्वत / सनातन / नित्य

19. पुनरुक्ति चिह्न " "

जब ऊपर लिखी किसी बात को ज्यों का त्यों नीचे लिखना हो तो उसके नीचे पुनः वही न लिखकर इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।
जैसे-
अल्प विराम
अर्द्ध " "
अपूर्ण " "
पूर्ण " "

अध्याय – 4

भाषा शिक्षण, भाषा शिक्षण के उपागम. भाषायी दक्षता का विकास

शिक्षण विधियाँ :-

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसका क्रियान्वयन पूर्व में निर्धारित उद्देश्यों को पाने के लिए किया जाता है। शिक्षक पूर्व में निर्धारित किए गए उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए व अपनी विषय - वस्तु की प्रदर्शन को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है।
इस प्रकार शिक्षण विधियाँ शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को शक्तिशाली बनाने वाले साधन हैं- जॉन डीवी के अनुसार "शिक्षण पद्धति वह विधि है जिसके द्वारा इस पठन सामग्री को व्यवस्थित करके परिणाम को प्राप्त करते है । '
वैस्ले ने कहा की "शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को बोध व ज्ञान की प्राप्ति होती है । "
शिक्षण के संदर्भ में डेविस के कथन भी महत्वपूर्ण है- "विद्यार्थियों के कक्ष में जाने से पहले तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि शिक्षक की समृद्धि हेतु कोई बात इतनी बाधक नहीं है जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी । "
एलन वैक्सन – एक शिक्षक को अपने जिम्मेदारी को निभाने हेतु विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियों को अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर सम्पन्न करनी होती है इन गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए विधिवत नियोजन तथा कार्यान्वयन सम्बन्धी उचित प्रक्रियों से गुजरना होता है । यह सब करने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को कुछ निश्चित सोपानों या अवस्थाओं में व्यवस्थित करके आगे बढ़ाना होता है ।
शिक्षण की एलन वैक्सन ने निम्न तीन अवस्थाएँ बताई है
1. शिक्षण पूर्व अवस्था - तैयारी या नियोजन की अवस्था
2. शिक्षणगत अवस्था- क्रियान्वयन या शिक्षण की अवस्था
3. शिक्षण उपरान्त अवस्था- पूनरावृत्ति या मूल्यांकन की अवस्था

भाषा शिक्षण की विधियाँ

भाषा शिक्षण एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण क्रिया है लेकिन उसके साथ – साथ यह आनंददायी क्रिया भी है। भाषा सीखने के मनोवैज्ञानिक चरण इस प्रकार है -
1. जिज्ञासा
2. प्रयत्न या तत्परता
3. अनुकरण
4. अभ्यास

शिक्षण में 'विधियाँ शब्द का उपयोग पढ़ाने की उन प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है जिनकी सफलतापूर्ण समाप्ति के परिणामस्वरूप विद्यार्थी कुछ सीखता है या

जिनके कारण शिक्षण प्रभावशाली होता है। 'विधियाँ' शिक्षक की अनेकों प्रक्रियाओं का एक समूह है। 'विधियाँ क्रिया नहीं एक प्रक्रिया है ।

श्रीमती एस. के. कोचर ने अपनी पुस्तक 'मेथड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग' में शिक्षण- विधियों के महत्व की अत्यन्त उत्तम व्याख्या की है । वे अपने लेखन में लिखती हैं," जिस प्रकार एक सैनिक को युद्ध के विभिन्न हथियारों का ज्ञान होना आवश्यक है उसी प्रकार एक शिक्षक को भी शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है । किस समय कौन सी विधि का प्रयोग किया जाए, यह उनकी निर्णय शक्ति पर निर्भर है। "इस प्रकार शिक्षण में शिक्षण विधियों का अत्यधिक महत्व है शिक्षण विधियों का ज्ञान सभी शिक्षकों को होना आवश्यक है। शिक्षण विधियों शिक्षा के उद्देश्यों तथा मूल्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है और शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होती है ।

उत्तम शिक्षण विधि की विशेषताएँ

शिक्षण - कला में उपयोग में लायी जाने वाली उत्तम विधि में निम्न विशेषताएँ होती है -

- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थी को विषय - वस्तु के प्रति प्रेरित करे ।
- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थियों को शिक्षा का सक्रिय सदस्य बनाए। विधियों में आवश्यक स्थानों पर विद्यार्थी द्वारा सम्पादन करने के लिए पर्याप्त क्रियाओं का होना आवश्यक है।
- विधियाँ सुनिश्चित एवं उपयोग करने योग्य हो ।
- उत्तम विधियाँ कलात्मक व व्यक्तिगत होती हैं। वे शिक्षक को वांछित एवं अवांछित का ज्ञान कराती हैं ।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में वांछित बदलाव लाती हैं और उनमें अच्छी आदतों एवं बातों का निर्माण करती हैं ।
- उत्तम-शिक्षण विधियाँ वे हैं जो पूर्व - निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो । शिक्षण विधि, शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होनी चाहिए।
- शिक्षण विधि छात्रों में वैज्ञानिक परिपेक्ष्य उत्पन्न करने वाली तथा वैज्ञानिक विधि से कार्य करने का प्रशिक्षण देने वाली हो ।
- शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का पालन करने वाली हो अर्थात् छात्र की योग्यता, स्तर,, रुचि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हो ।
- सजीव वातावरण बनाने में सहायता करता हो जो विद्यार्थियों को अन्त : क्रिया के अधिकतम अवसर देने वाली व उत्साहवर्धन वाली हो ।
- करके सीखने के सिद्धान्त अर्थात् क्रियाशीलता पर आधारित होनी चाहिए।
- कम से कम समय लेने वाली तथा प्रभावी हो ।
- शिक्षण विधि में व्यावहारिकता होनी चाहिए अर्थात् उसे सरलता से उपयोग में लिया जा सके। शिक्षण विधि को गतिशीलपूर्ण होना चाहिए न कि स्थिर ।
- वह विद्यार्थियों में मानसिक गुणों के साथ - साथ शारीरिक, सामाजिक व संवेगात्मक गुणों का विकास करने वाली अर्थात् सर्वांगीण विकास के अवसर देनी वाली हो ।
- विधि शिक्षण सहायक सामग्रियों के माध्यम से सरल व स्पष्टता लाने वाली हो जिससे शिक्षक व विद्यार्थी दोनों ईमानदारी व आत्मविश्वास से शिक्षण प्रक्रिया में भाग लें तथा यह विद्यार्थियों को रटने से विधियाँ ऐसी हों करने वाली हो ।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में मानसिक तर्क, निर्णय तथा विश्लेषण-शक्ति का विकास करती हैं तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पूर्ण मान्यता प्रदान करती हैं।

<u>अनुकरण विधि</u>

सामान्यतः अनुकरण विधि का प्रयोग लिखित अनुकरण, उच्चारण अनुकरण एवं रचना अनुकरण के रूप में किया जाता है ।

- ***लिखित अनुकरण*** :- जब छात्र के द्वारा शिक्षक के द्वारा लिखित कार्यों का अनुकरण किया जाता है, उसे लिखित अनुकरण कहा जाता है, जिसके निम्न प्रकार हैं :

  I. रूप-रेखा अनुकरण :- इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा अक्षरों व वर्णों को लिखा जाता है, जिनका अनुकरण करते हुए छात्र उन्हीं आकृतियों पर पेन, पेंसिल घुमाता है । इसके लिए मुद्रित अभ्यास पुस्तिकाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है ।

  2. स्वतंत्र अनुकरण :- इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा श्यामपट्ट या अभ्यास पुस्तिका पर अक्षर लिखे जाते हैं जिनको वैसा ही अनुकरण या लिखने को छात्र से कहा जाता है ।

- ***उच्चारण अनुकरण*** :- इसके अन्तर्गत शिक्षक ध्वनिपूर्ण या मौखिक रूप से कुछ शब्दों का उच्चारण करता है, जिनका अनुकरण करते हुए छात्र भी वैसा ही उच्चारण करता है।
- ***रचना अनुकरण*** :- इसके अन्तर्गत रचना को जिस भाषा व शैली में प्रस्तुत (नाटक, पद्य व गद्य) करते हैं, छात्र उस रचना पर आधारित रचनाओं का अनुकरण (नकल) करता है। प्राथमिक स्तर पर रचना शिक्षण के लिए चित्र निर्माण पर बल देना चाहिए। निबंध रचना के कलात्मक पक्ष के अन्तर्गत शब्दावली भाषा व वाक्य रचना का विशेष महत्व होता है किसी रचना के विषय में स्वतंत्र राय व आत्म विश्वास उत्पन्न करने के लिए भाषा व साहित्य का होना आवश्यक है।

<u>ध्वन्यात्मक विधि</u>:

- भाषा विज्ञान में सबसे पहले एवं सर्वाधिक ध्यान तथा बल ध्वनि विज्ञान पर ही दिया जाता है ।
- इसमें अर्थ की अपेक्षा ध्वनि पर ही अधिक बल डाला जाता है।
- इस पद्धति के अनुसार नवीन भाषा का सुनना तथा उसका अनुकरण करके बोलना सबसे अधिक आवश्यक है। किसी

भी भाषा की ध्वनियों पर अधिकार प्राप्त कर लेने से उसका बोलना तथा लिखना सरल हो जाता है।

- उच्चारण सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने के लिए आजकल लिंग्वाफोन, भाषा-प्रयोगशाला, इयरफोन, टेपरिकॉर्डर आदि यन्त्रों की सहायता बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है। इनके द्वारा विद्यार्थी अपेक्षित ध्वनियों को बार-बार सुनकर कानों को अभ्यस्त कर लेता है और अनुकरण द्वारा शुद्ध उच्चारण करने लगता है।

गुण :

- इस विधि में एक साथ उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं जैसे नर्म, गर्म, मर्म, शक्ति, भक्ति, मुक्ति आदि ।
- हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण स्थान के अनुसार सन्जित है। यह विधि उनका पूरा-पूरा लाभ उठाती है। इसमें अंग्रेजी वर्णों का उच्चारण दोष दूर हो जाता है। अतः आरम्भ में ही bat, cat,rat, mat आदि सिखाए जाते हैं।
- ***नोट :- ध्वन्यात्मक विधि की खोज व सर्वप्रथम प्रयोग का श्रेय आइकिल सेमर (1535 ई.) को है। विधि का प्रयोग वेब्सटर के द्वारा अमेरिका में 1782 ई. में किया गया है।***

<u>प्रत्यक्ष विधिः –</u>

व्याकरण अनुवाद विधि की सीमाओं को दूर करने तथा भाषा-शिक्षण को व्यावहारिक बनाने की दृष्टि से प्रत्यक्ष विधि का महत्व है। इस विधि में शिक्षार्थी (विद्यार्थी) की मातृभाषा को मध्यस्थ नहीं बनाया जाता। सीखे जाने वाली अन्य भाषा के सीधे संपर्क में लाकर शिक्षार्थी (विद्यार्थी) को मौखिक अभ्यास के सहारे भाषा सिखायी जाती है, इसलिए इस विधि को 'मौखिक वार्तालाप विधि' भी कहा जाता है। देर तक वाक्यों को सुनना व फिर उनका इस तरह दोहराते हुए अभ्यास करना कि वे वाक्य आदत के रूप में ढल जाएँ, इस विधि की मुख्य शिक्षण प्रक्रिया है। यह विधि भाषा अधिगम की स्वाभाविक प्रक्रिया पर आधारित है जिसकी प्रमुख मान्यता यह है कि –

- भाषा का तात्पर्य बोलने से है, लिखने से नहीं ।
- भाषा आदतों का समूह है।
- भाषा वह है जैसी मूल भाषा-भाषी लोग बोलते हैं, वह नहीं जो व्याकरण देता है।

अपनी इन मान्यताओं के कारण प्रत्यक्ष विधि भाषा शिक्षण की एक प्रमुख और लोकप्रिय विधि के रूप में विकसित हुई क्योंकि इसका लक्ष्य था भाषा शिक्षण के माध्यम से शिक्षार्थी में भाषा व्यवहार को विकास करना। इस विधि का मुख्य सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार छात्र श्रवण एवं अनुकरण द्वारा मातृभाषा सीख लेता है, उसी प्रकार वह दूसरी भाषा भी सीख सकता है। इसमें भाषा के दो आधारभूत कौशलों- 'सुनना और बोलना' को सीखने का पर्याप्त अवसर मिलता है तथा उस भाषा की ध्वनियों एवं उच्चारणों से छात्र सहज ही परिचित हो जाता है।

- सम्प्रेषणपरक भाषा - शिक्षण विधिः

- प्रत्यक्ष विधि में भाषा सीखने से संबंधित व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया गया । इसी पक्ष को और प्रबल बनाने के लिए संप्रेषणपरक भाषा - शिक्षण विधि सामने आई जिसने भाषा शिक्षण के निम्नलिखित लक्ष्यों को जोड़ा -
- भाषा सीखने का तात्पर्य, भाषा प्रयोग को सीखना है। भाषा प्रयोग सीखने के अंतर्गत ही भाषा की संरचना को सीखना समाहित रहता है।
- भाषा को केवल एक नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में ही सीखना पर्याप्त नहीं है उसे एक सामाजिक संप्रेषण की के रूप में सीखना सिखाना चाहिए।
- भाषा सीखने का तात्पर्य है, सीखी जाने वाली भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक नियमों को भली - भाँति सीखना।
- किसी विशिष्ट स्थिति के संदर्भ में किन भाषिक इकाइयों का व्यवहार उपयुक्त ढंग से किया जाए यह जानना भी आवश्यक है।
- कोई भी भाषा सीखने का तात्पर्य है उसकी संप्रेषणपरक युक्तियों को जानना ।

इस प्रकार संप्रेषणपरक भाषा विधि ने भाषा - शिक्षण को एक ऐसा आधार दिया जिसमें भाषा के मौखिक रूप और उसकी सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रमुखता प्रदान की गई। प्रत्यक्ष विधि से जुड़कर इस विधि ने भाषा शिक्षण को उस रूप में सामने रखा जो यह मानता है कि भाषा सीखने का अर्थ भाषा प्रयोग के नियमों को सीखना है न कि भाषा के व्याकरणिक नियमों को ।

<u>व्याकरणः-</u>

व्याकरण एक ऐसी कला है जिसकी माध्यम से हम किसी भी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जब हम किसी भाषा को लिखते हैं तब उस भाषा को लिखने के क्या नियम होने चाहिए। या जब हम कोई भाषा बोलते हैं तब उस भाषा को बोलने के सही नियम क्या होने चाहिए और यदि हम कोई भाषा को पढ़ते हैं तो उस भाषा को पढ़ने के सही नियम क्या होने चाहिए तो मतलब पढ़ने, लिखने, बोलने, या समझने के लिये हम जिन नियमों को उपयोग में लाते हैं उन सभी नियम के रुप को ही हम व्याकरण कहते हैं ।

व्याकरण की परिभाषाः- जिन नियमों के अन्तर्गत किसी भाषा को शुद्ध बोलना लिखना एवं ठीक प्रकार से समझना आता है उन्हें व्याकरण कहते हैं अथवा व्याकरण वह शास्त्र है, जिससे हमें भाषा का शुध्द ज्ञान होता है।

व्याकरण की परिभाषाः- व्याकरण की निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई हैं ।

- ***लैंगर के अनुसार-*** "प्रचलित भाषा संबंधी नियमों की व्याख्या ही व्याकरण है।"
- ***डॉ. स्वीट के अनुसार-*** "व्याकरण भाषा का व्यवहारिक विश्लेषण अथवा उसका शरीर विज्ञान है।"
- ***व्याकरण की विशेषताएँः-*** व्याकरण की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।
- व्याकरण भाषा का अंगरक्षक तथा अनुशासक है।

1. छन्दानुगत शैली । 2. भावात्मक वाचन शैली ।

इनमें छन्दानुगत शैली के अनुसार वाचन करने में छन्द की गति, यति और लय का ध्यान रखना चाहिए। परन्तु कक्षा में कभी गाकर नहीं पढ़ना चाहिए, क्योंकि कविता-पाठ और कविता-गान में बड़ा अन्तर है। भावानुसार कविता-वाचन में भी यद्यपि भावाभिव्यक्ति ही प्रधान होती है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि छन्द की पूर्णतः उपेक्षा जानी चाहिए। यह सत्य है कि भावानुसार कविता-वाचन में यति और लय का परित्याग हो जाता है, परन्तु यथाप्रयत्न छन्द का प्रवाह नष्ट नहीं होने देना चाहिए।

• हिन्दी शिक्षण की समस्याए

- बहु भाषिक कक्षा में शिक्षण के लिए उचित रणनीतियाँ तय करना ।
- विद्यार्थियों का दृष्टिकोण नकारात्मक होना ।
- पाठयक्रम का दोषपूर्ण होना।
- शिक्षण में नवाचारों का अभाव होना।

वाचन सामग्री :

वाचन की दृष्टि से केवल जीवन-चरित एवं कथाएँ अनुपयुक्त होती हैं, क्योंकि उनसे स्वर की प्रभावोत्पादकता नहीं साधी जा सकती। अतः वाचन शिक्षण के लिए अनेक प्रकार की सामग्री प्रस्तुत की जानी चाहिए।

वाचन की सामग्री का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए। इस सामग्री का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सामग्री को व्यापक होना चाहिए। वाचन के लिए निम्नलिखित सामग्री उपादेय होगी और इन सभी के शिक्षण के समय उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में वाचन-कौशल का विकास किया जा सकता है :

1. निबन्ध :

(अ) विचार - प्रधान, भाव-प्रधान, व्यंग्य एवं विनोद-प्रधान, व्यक्तिपरक एवं विषयपरक निबन्ध ।

(ब) निबन्ध के विषय :

(i) सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं से सम्बन्धित निबन्ध ।
(ii) खोज एवं साहस से सम्बन्धित निबन्ध ।
(iii) सरल मनोवैज्ञानिक निबन्ध ।
(iv) वैज्ञानिक निबन्ध ।
(v) देश-प्रेम एवं संस्कृति से सम्बन्धित निबन्ध ।
(vi) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित निबन्ध।
(vii) प्रकृति से सम्बन्धित निबन्ध ।

2. संस्मरण, शब्दचित्र ।
3. आत्मकथा, जीवनी, डायरी, रिपोर्ताज, पत्र ।
4. नाटक, एकांकी, संवाद ।
5. कहानी - चरित्र - प्रधान, वातावरण प्रधान, समस्या - प्रधान ।
6. उपन्यास।
7. कविता :

1. देश-प्रेम, वीरता, नीति, भक्ति, प्रकृति-वर्णन, जीवन-दर्शक पर प्रबन्धात्मक एवं मुक्तक- दोनों प्रकार की शैलियों में लिखी कविताएँ ।
2. भावात्मक गीत, छायावादी, रहस्यवादी एवं प्रगतिवादी कविताओं में से चुनी हुई कविताएँ ।
3. खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रज, अवधी, राजस्थानी और मैथिली की कुछ सरल कविताएँ ।

वाचन शिक्षण विधियाँ

शिक्षा-जगत् में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, विधि ।

"जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं :

1. देखो और कहो विधि ।
2. अक्षर-बोध विधि ।
3. ध्वनि साम्य विधि।
4. अनुध्वनि विधि।
5. भाषा शिक्षण की यन्त्र - विधि ।
6. समवेत पाठ विधि ।
7. संगति विधि।

1. देखो और कहो विधि : इस विधि में एक पूरा शब्द श्यामपट्ट पर लिख दिया जाता है और अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान कराई जाती है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि अव्यवहृत शब्दों के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता । एक तो शब्दों की संख्या अपरिमित होती है : कहाँ तक उसका परिचय कराया जाए। दूसरी बात यह कि थोड़ी-सी सावधानी से 'मर्म का धर्म अथवा 'धर्म का धर्म पढ़ा जा सकता । अतः यह विधि त्याज्य है।

2. अक्षर-बोध विधि : इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सन्निहित है। जब वर्ण पहचान लिया जाता है तो छात्र को शब्द दे दिया जाता है; जैसेः क, म, ल अक्षरों से मिलकर 'कमल' शब्द । इस विधि में इस प्रकार ऐसा अभ्यास कराया जाए कि छात्र की दृष्टि परिधि सध जाए। अक्षर का स्वरूप उसे स्थिर न करना पड़े, वरन् देखते ही शब्द का स्वरूप उसकी दृष्टि पकड़ ले।

3. ध्वनि-साम्य विधि : इसमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ सिखाए जाते हैं, जैसेः श्रम, क्रम, भ्रम आदि। इनमें जान-बूझकर बालकों को ऐसे शब्द सीखने पड़ते हैं, जिनको वह अपने व्यवहार में नहीं पाते। जैसे चर्म, कर्म, गर्म, वर्म तथा मर्म आदि। इनमें कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका छात्र तद्भव रूप में प्रयोग करते हैं, अतः यह विधि भी असंगत तथा त्याज्य है।

4. अनुध्वनि विधि : यह भी 'देखो और कहो' विधि का रूपान्तर मात्र ही है। अन्तर केवल इतना है कि इनमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ ही सिखाए जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है और छात्र उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करता है। इसका प्रयोग अधिकतर उन

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp -https://wa.link/98bnwi 1 web.- https://shorturl.at/belyI

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
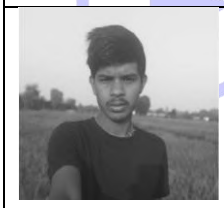	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
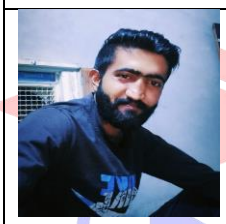	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/98bnwi

Online Order करें - https://shorturl.at/ixJQI

https://shorturl.at/belyI

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE